पूछ न कबिरा जग का हाल

लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

तेवरीकार-रमेशराज

प्रथम संस्करण-२०१२, मूल्य-४० रुपये, सर्वाधिकार-लेखकाधीन
सार्थक-सृजन प्रकाशन, 15/109, ईसानगर
निकट-थाना सासनी गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)
मोबा.- 09634551630

परिचय



रमेशराज

पूरा नाम-रमेशचन्द्र गुप्ता
जन्म-15 मार्च 1954, गांव-एसी, अलीगढ़
शिक्षा-एम.ए. हिन्दी, एम.ए. भूगोल
सम्पादन-तेवरीपक्ष (त्रैमा.)

सम्पादित कृतियां 1. अभी जुबां कटी नहीं (तेवरी-संग्रह) 2. कबीर ज़िन्दा है (तेवरी-संग्रह) 3. इतिहास घायल है (तेवरी-संग्रह) 5-एक प्रहार: लगातार (तेवरी संग्रह)

स्वरचित कृतियां- रस से संबंधित-1. तेवरी में रससमस्या और समाधान 2-विचार और रस (विवेचनात्मक निबंध) 3-विरोध -रस 4. काव्य की आत्मा और आत्मीयकरण

तेवर-शतक-लम्बी तेवरियां-1. दे लंका में आग 2. जै कन्हैयालाल की 3. घड़ा पाप का भर रहा 4. मन के घाव नये न ये 5. धन का मद गदगद करे 6. ककड़ी के चोरों को फांसी 7.मेरा हाल सोडियम-सा है 8. रावण-कुल के लोग 9. अन्तर आह अनंत अति 10. पूछ न कबिरा जग का हाल

शतक-1.ऊघौ कहियो जाय (तेवरी-शतक) 2. मधु-सा ला (अष्ठपदी शतक) 3.जो गोपी मधु बन गयीं (दोहा-शतक) 4. देअर इज ए ऑलपिन (दोहा-शतक) 5.नदिया पार हिंडोलना (दोहा-शतक) 6.पूजता अब छल (हाइकु-शतक)

मुक्तछंद कविता-संग्रह-1. दीदी तुम नदी हो 2. वह यानी मोहन स्वरूप **बाल-कविताएं**- 1.राष्ट्रीय बाल कविताएं

प्रसारण-आकाशवाणी मथुरा व आगरा से काव्य-पाठ

सम्मानोपाधि-'उ.प्र. गौरव', 'तेवरी-तापस', 'शिखरश्री'

अभिनंदन-सुर साहित्य संगम (एटा), शिखर सामाजिक साहित्कि संस्था अलीगढ़

पूर्व अध्यक्ष-राष्ट्रीय एकीकरण परिषद, उ.प्र.शासन,अलीगढ़ इकाई

सम्प्रति-'दैनिक जागरण' से स्वतंत्र पत्रकार के रूप में सम्बद्ध

सम्पर्क-15/109,ईसानगर,निकट-थाना सासनीगेट,अलीगढ़,उ.प्र.
मोबा. 09634551630

पूछ न कबिरा जग का हाल

(लम्बी तेवरी-तेवर-शतक)

रमेशराज

खुशी न लेती आज उछाल
इस जीवन से अच्छी मौत। 1

पूछ न मुझसे मेरा हाल
मुझको किश्तों में दी मौत। 2

है जीवन फूलों की डाल
उसे सूँघती तितली-मौत। 3

कभी घास से पूछ सवाल
कैसे रचती खुरपी मौत। 4

तरल तरंगित कल का हाल
अब है कफ्फन-काँटी मौत। 5

'एण्डरसन' आकर भोपाल
बाँटी सिर्फ मौत ही मौत। 6

यदि दहेज का आज सवाल
कल पायेगी बेटी मौत। 7

पके नहीं थे सच के बाल
सच ने पायी कच्ची मौत। 8

जीवन है यदि दुग्ध-उबाल
होती जमे दही-सी मौत। 9

खत्म हुए सारे स्वर-ताल
टूटी हुई बाँसुरी मौत। 10

गर्म रेत जब भरे उछाल
तो हो फूल-कली की मौत। 11

घर का बँटवारा हर हाल
अब भइया, भइया की मौत।12

जल में मछुआरे का जाल
मीनों की अब आयी मौत। 13

हुए ख्वाब रंगीन हलाल
अब आँखों में तेरी मौत। 14

बदन दिया केरोसिन डाल
अब माचिस की तीली मौत। 15

ये निर्बन्ध नदी का हाल
बनकर आया पानी मौत। 16

कहाँ 'भगत' जैसा अब लाल
जो मुस्काये फाँसी-मौत। 17

पूछ न कबिरा जग का हाल
बिन पाटों की चाकी मौत। 18

काली-काली भोर, न लाल
भोर हुए सूरज की मौत। 19

बेटा पाकर गर्भ निहाल
पर पाती है बेटी मौत। 20

पउआ लेता प्राण निकाल
कहीं बनी है पिन्नी मौत। 21

कलियुग का बस यही कमाल
हँस-हँस सबने बेची मौत। 22

देख पतंगा दीप निहाल
उसको पल-पल सूझी मौत। 23

झट एटम ने किया कमाल
थल से लेकर जल भी मौत। 24

बना कबूतर जैसा हाल
पास खड़ी बन बिल्ली मौत। 25

भूत-प्रेत के जिधर धमाल
खोल रही वो खिड़की मौत। 26

दूध करे तन आज हलाल
धीरे-धीरे दे घी मौत। 27

बधिक रहा है चारा डाल
बकरा सोचे, 'आयी मौत'। 28

देख लिया जीवन का हाल
आगे हमें देखनी मौत। 29

वहाँ-वहाँ थे जीव निढाल
जहाँ-जहाँ भी डोली मौत। 30

बस्ती पर बम दिया उछाल
चिथड़े-चिथड़े बिखरी मौत। 31

जहरखुरानों का ये हाल
लेकर आये 'बरफी-मौत'। 32

यही बुढ़ापे बीच मलाल
खाक ज़िन्दगी, अच्छी मौत। 33

रूप लिये था 'घन' विकराल
पोखर-नदिया झलकी मौत। 34

ज़िन्दा रहना बना सवाल
बच जायेंगे तो भी मौत। 35

राम बने रावण-सम ज्वाल
माँग रहे अब तुलसी मौत। 36

हम सुकरात रहे हर हाल
अमृत के सम पी ली मौत। 37

पिय के पहले प्राण निकाल
फिर तिय-तोड़े चूड़ी मौत। 38

कहीं टिकी सर पर द्विनाल
कहीं गले में रस्सी मौत। 39

जीवन जहाँ मौन का जाल
देती वहाँ गवाही मौत। 40

थर-थर काँप रही हर डाल
बनकर खड़ी कुल्हाड़ी मौत। 41

जीवन, चहल-पहल-भूचाल
जीवन में खामोशी मौत। 42

कहाँ बँधा सुख सबके भाल
दुःख जीवन में, दुःख ही मौत। 43

चल मूरख चाहे जिस चाल
कदम-कदम पर बैठी मौत। 44

भले गले का खस्ता हाल
पेश न करे मुलैठी मौत। 45

तेरी रंगत हो बदहाल
जब छूएगी चमड़ी मौत। 46

सुत के लेती प्राण निकाल
'मोरध्वज की आरी' मौत। 47

कुंडल-कवच न रखे सँभाल
वो ही मरे 'करण' की मौत। 48

जीवन कुछ साँसों की चाल
इसके बाद मौत ही मौत। 49

मुंसिफ गद्दारों की ढाल
देशभक्त को लिख दी मौत। 50

अब भी दयानंद के हाल
मरना है पारे की मौत। 51

खाकर गोली हुआ निढाल
आशिक पाये मीठी मौत। 52

भले कमल जैसा हो हाल
कीचड़ में कीचड़-सी मौत। 53

नगरवधू-सी बन वाचाल
कर संकेत बुलाती मौत। 54

पत्नी आशिक संग निहाल
पति को पता न पत्नी मौत। 55

जीव असीमित किये हलाल
फिर भी रही 'सुनामी' मौत। 56

फिर से वही 'जुए' की चाल
कुरुकुल बीच द्रौपदी मौत। 57

रेप, फिरौती, छल, भूचाल
अखबारों की सुर्खी मौत। 58

लखि माया मन भरे उछाल
कल को 'खाली मुट्ठी-मौत'। 59

सबको फँसना है हर हाल
जाल पूरती मकड़ी मौत। 60

जीवन सुख का क्षणिक उबाल
भय की 'बारहमासी' मौत। 61

सूख गयी जब काया-डाल
कोयल जैसी कूकी मौत। 62

रावण पाये मृत्यु अकाल
काल-विजेता की भी मौत। 63

दिन के बाद रात का जाल
हँसी-ठहाके-चुप्पी-मौत। 64

पूर्ण हुई जीवन की चाल
बेटा-नाती-पंती-मौत। 65

मधुर दुग्ध जीवन फिलहाल
पड़ी दूध में मक्खी मौत। 66

धीरे-धीरे शाम निढाल
होती गयी सुबह की मौत। 67

जिसको बजा रहा है काल
वो खतरे की घंटी मौत। 68

शिव का शव बनना हर हाल
लिये आग की कण्डी मौत। 69

बेटी भागी, बनी छिनाल
बाप कहे अब 'कुल' की मौत। 70

काया का मद कितने साल
साथ-साथ जब चलती मौत। 71

जीवन बनता एक सवाल
जब ले उल्टी गिनती मौत। 72

प्रहलादों के हिस्से ज्वाल
अग्नि-सहेली 'होली' मौत। 73

भर ले तब तक जीव उछाल
जब तक रहे अजनवी मौत। 74

कुछ दिन तक ये सरल सवाल
फिर है आड़ी-तिरछी मौत। 75

थमती तुरत रक्त की चाल
पकड़े नब्ज जरा-सी मौत। 76

तुझको देगी औंधा डाल
तीरंदाज-तोपची मौत। 77

ले अन्तिम भी बूँद निकाल
बनी रक्त की प्यासी मौत। 78

वह था कह तैराक निहाल
जिसकी लहरों में थी मौत। 79

कब देखा पंछी ने जाल
दाना बनकर बिखरी मौत। 80

जग माया लिपटे का जाल
माया से आजादी मौत। 81

सुख में दर्दों का भूचाल
बनकर कम्पन आयी मौत। 82

तू बन्दर-सा भरे उछाल
तेरे लिए मदारी मौत। 83

किसने समझा यह जंजाल
किसने आकी-नापी मौत। 84

सागर-तट पर देख कमाल
पूनम-रात चांदनी मौत। 85

मरुथल बीच फैंककर ज्वाल
बन जाता सूरज भी मौत। 86

जिनके पास न सच की माल
मिलनी उन्हें तामसी मौत। 87

मौत कहे मत पूछ सवाल
आगे होगी किसकी मौत। 88

लेती ब्रैड बेकरी डाल
तन्दूरों की भट्‌टी मौत। 89

चले मिलन की इच्छा पाल
सागर बीच नदी की मौत। 90

वायुयान में बैठा लाल
थल को छोड़ हवाई मौत। 91

जब ले डमरू-शूल निकाल
जीवन-दाता शिव भी मौत। 92

तेरे ही फाले में डाल
खेले क्रूर कबड्‌डी मौत। 93

पहलवान बन ठोंके ताल
तोड़े पसली-हड्‌डी मौत। 94

कहीं बनी अजगर-घड़ियाल
कहीं साँप-सी सरकी मौत। 95

‘टूटा मुस्कानों का जाल’
आ अधरों पर बोली मौत। 96

सब कुछ है ‘जीरो’ हर हाल
हल करती यह गुत्थी मौत। 99

बना आज हर धर्म सवाल
लिये दुनाली उगली मौत। 100

जीत इसी की है हर हाल
चले जिधर भी गोटी मौत। 101

दर्शक के मन में भूचाल
अभिनेता की नकली मौत। 102

छन्छबद्ध चुटकुले निकाल
कवि ने की कविता की मौत। 103

सास बहू से करे सवाल
कब आयेगी तेरी मौत। 104

जीवन की टूटी मणि–माल
सब रोयें पर हँसती मौत। 105

बाजारों में लोग दलाल
होनी नैतिकता की मौत। 106

लड़ना 'सिस्टम' से हर हाल
गर साधी खामोशी, मौत। 107

रहे ज़िन्दगी देख निहाल
अब जाने बस साथी मौत। 108

जो करते धरती को लाल
उनको रचे तेवरी मौत। 109

रस-परम्परा में एक नये रस की खोज

विरोध-रस

शोधकर्त्ता-रमेशराज, कृतिमूल्य-सौ रुपये

विरोध-रस क्या है?

जब किसी आश्रय में तिरस्कारादि के कारण स्थायी भाव, 'आक्रोश' जाग्रत होता है तो वह आलंबनों के प्रति केवल असहमति ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि उसके अनुभावों में धिक्कारना, अपशब्द बोलना, निंदा करना स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है, जो अन्ततः विरोध-रस की निष्पत्ति का सूचक है।

'विरोध-रस' विद्वानों की दृष्टि में-

कुछ भाव तो ऐसे हैं कि आलंबन बदल जाने से वे स्वतः स्वतंत्र रूप धारण कर लेते हैं। 'प्रेम' ऐसा ही मानो सत्य है। कुछ संचारी भी इतने सशक्त हो जाते हैं कि रस का परिपाक हो जाता है। परम्परत रूप से आपके द्वारा प्रवत्त **'विरोध-रस'** रौद्र रस के अन्तर्गत आता है, परन्तु वह विरोध जिसमें व्यवस्था के प्रति अथवा किसी सामाजिक बुराई के प्रति गुस्सा या 'आक्रोश' होता है, वह व्यक्तिगत क्रोध से सर्वथा भिन्न है।... आपकी स्थापना से एक स्पष्ट मार्ग प्रशस्त होता है। -**डॉ. परमलाल गुप्त**

'विरोध-रस' पर सार्थक चर्चा चल रही है। अनवरत प्रयास निकट भविष्य में रंग दिखायेगा।-**डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'**

'विरोध-रस' पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।... इससे साहित्य की परंपरा विकसित होगी -**डॉ. हरेराम पाठक**

'विरोध-रस'- खूब! आपके कार्य शोधपरक। -**अशोक अंजुम**

'विरोध-रस' के 'अनुभाव', 'विभाव', 'संचारी भाव' पर शोधपरक लेख पठनीय।-**डॉ. शारदा प्रसाद 'सुमन'**

'विरोध-रस' पर सामग्री उत्तम। -**डॉ. गणेशदत्त सारस्वत**

'विरोध'शास्त्रीय दृष्टि से रस ही है।-**डॉ. नटवर नागर**

विरोध-रस शोधपरक। -**डॉ. ज्ञानवती दीक्षित**

'विरोध-रस' की नयी अवधारणा और उसके विविध शास्त्रीय पक्षों की व्याख्या उत्साहवर्द्धक। आपका यह प्रयास हिन्दी जगत की सामयिक हलचलों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। -**कृष्णकांत 'एकलव्य'**

शोधार्थियों के लिये एक महत्वपूर्ण पुस्तक

विचार और रस

(रस-निष्पत्ति का वैचारिक विवेचन)

लेखक-रमेशराज

राष्ट्रीय बाल कविताएँ

कवि-रमेशराज

प्राप्ति स्थल-बजरंग प्रकाशन, सागरपुर, दिल्ली

महत्वपूर्ण तेवरी संग्रह

(१) अभी जुबां कटी नहीं	संपादक-रमेशराज
(२) कबीर ज़िन्दा है	संपादक-रमेशराज
(३) इतिहास घायल है	संपादक-रमेशराज
(४) एक प्रहारः लगातार	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(५) देश खण्डित हो न जाए	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(६) ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी	तेवरीकार- दर्शन बेज़ार

सार्थक-सृजन, १५-१०९, ईसानगर,

निकट-थाना सासनीगेट, अलीगढ़